रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड ९: सम्पजना (ख़ालस एहसास)

'सम्पजना', 'ख़ालस एहसास', मगध में शफ़ाफ़ ज़मीर वाले जिज्ञासु की जूस्तजू। गुरु नानक ने अपने विचारों का व्याख्यान उन संशयवादियों के सामने किया जो हाज़रा-हज़ूर के अस्तित्व को ना तो स्वीकार करते हैं और ना ही इनकार करते हैं।

हुकमे आडाणे आगासी ॥
हुकमे जल थल तृभवण वासी ॥
हुकमे सास गिरास सदा फुन हुकमे देख दिखाइदा ॥
(राग मारू, गुरु नानक)

कुदरत के हुकम से आकाश का व्यापक पसारा बंधा हुआ है।
कुदरत के हुकम के तहत जल, थल और तीनों जगत में चेतना निवास करती है।
कुदरत के हुकम में सृरजना धड़कती है और विकास करती है। कुदरत के हुकम को जितना बुझा जाये यह उतना ही ज़ाहिर होता है।
(राग मारू, गुरु नानक)

कुदरत का हुकम ही लगातार पूरी कायनात की गति को बनाये रखता है। इसमें कर्मों के लचीलेपन की नवाज़िश है और प्रत्येक मनुष्य के हिस्से में कर्मों की मर्ज़ी का मालिकाना हक़ आया है। गुरु नानक ने फ़रमाया कि प्रत्येक मनुष्य के कर्म ही उसके भाग्य का निर्धारण करते हैं।

वाराणसी से गुरु नानक और भाई मरदाना ने चंदौली, सासाराम, गया, बोध गया और हाजीपुर होते हुये सोनपुर का सफर किया। वह वाराणसी के बाद सबसे पहले चंदौली के लिये रवाना हुऐ।

वाराणसी से हाजीपुर के रास्ते में हमने रेल से चंदौली जाने का फ़ैसला किया। उत्तर प्रदेश में, चंदौली बिहार की सीमा के पास गंगा नदी के दक्षिण-पूर्व में स्थित है।

ज़िंदगी रेल के सफ़र की तरह है। मुसाफ़िर जन्म से मौत के सफ़र की तरह एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन का सफ़र करते हैं और रास्ते में मिलते-बिछड़ते रहते हैं। रेल का सफ़र सिखाता है कि हमें हालात का बेग़र्ज़ हो करके फ़ायदा लेते हुये और बिना किसी शर्त के लगाव रखते हुये बेलाग होना चाहिए।

'जन्मसाखी' साहित्य में दर्ज है कि गुरु नानक की मुलाकात चंदौली में हरी नाथ से हुई जो शहर के मुखिया थे। हरी नाथ के मन की हालत हंगामाख़ेज़ थी और वह अपने मुखिया के पद को त्यागने की सोच रहे थे। गुरु नानक ने उन्हें सलाह दी कि वह गुणवान नेताओं की तरह अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाये और बेग़र्ज़ भाव से लोगों की सेवा करे, ऐसा करते समय वह लगाव कायम रखते हुये भी बेलाग रह सकते हैं।

जीउ तपत है बारो बार ॥
तप तप खपै बहुत बेकार ॥
जै तन बाणी विसर जाइ ॥
जिउ पका रोगी विललाइ ॥
बहुता बोलण झखण होइ ॥
विण बोले जाणै सभ सोइ ॥
(राग धनासरी, गुरु नानक)

मन बार-बार विपत्ति में बेचैन होता रहता है।
और अनावश्यक पीड़ा झेलता है।
जो शरीर बाणी भूल जाता है
वह पुराने रोगी की तरह विरलाप करता रहता है।
ज़्यादा बोलना फ़िज़ूल है।
हमारे बोलने के बिना भी
इलाही ताकत सब जानती है।
(राग धनासरी, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कहा कि जब मन भर्म में फंसा हो तो यह ग़मग़ीन और बड़बोला हो जाता है। यह तन और मन को ज़ख़्मी करता है। इसका एक ही इलाज है कि मनुष्य अपनी आत्म-पड़चोल के द्वारा वहदत के सत्य को स्वीकार करे।

चंदौली में हमें गुरु नानक के यहां आने की कोई याद-निशानी नही मिली।

चंदौली से गुरु नानक और भाई मरदाना ने सासाराम का सफ़र किया।

हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर चंदौली से सासाराम जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: इतिहास की नज़र से सासाराम पर सूफ़ी मत का असर रहा है। गया जाने के समय गुरु नानक सासाराम के रास्ते गये थे।

सासाराम शक्तिशाली अफ़ग़ान बादशाह शेर शाह सूरी का जन्मस्थान है जिन्होंने सोलवीं शताब्दी के दौरान उत्तरी भारत में शासन किया था। सासाराम बिहार का शहर है जिसका इतिहास वैदिक काल तक फैला हुआ है। यह शहर बौद्ध मत के तीर्थ स्थल गया को जाते हुये रास्ते के लिये मशहूर था।

सासाराम में गुरु नानक की याद से जुड़ा कोई विशेष स्थान नहीं है।

सासाराम शहर में गुरुद्वारा चाचा फग्गू मल्ल है। यह गुरुद्वारा चाचा फग्गू मल्ल की याद में बना हुआ है, जिन्हें गुरु नानक के संदेश का प्रचार करने के लिये गुरु अमर दास ने भेजा था। उदासी संप्रदाय ने गुरु नानक के फ़लसफ़े के प्रचार के लिये बिहार में कई केंद्र स्थापित किये थे जो इतिहास की गुमनामी में खो गये हैं। सासाराम के बाहर एक शांत गाँव है यहां हमारी मुलाकात महंत बजरंगी दास उदासीन से हुई। वह गुरु नानक के अनुयायी और 'प्राचीन ऐतिहासिक उदासीन गुरुद्वारा' के सेवादार हैं। यह स्थान गुरु तेग़ बहादुर की याद में बनाया गया है।

महंत बजरंगी दास उदासीन:

सभ ते वडा सतिगुर नानक जिन कल राखी मेरी ॥
सतिगुर बंधन तोड़ निरारे बहुड़ न गरभ मझारी जीउ ॥
नानक गिआन रतन परगासिआ हर मन वसिआ निरंकारी जीउ ॥
(गुरु नानक)

नानक ने फ़रमाया कि सबसे बड़े सच्चे गुरु वह हैं जिन्होंने मुझे बुरी सोचों से बचाया है।

सच्चा विवेक मनुष्य को रोशन-ख़्याल बनाता है और बुरी सोच के बंधन में फंसने नहीं देता।
नानक ने फ़रमाया कि जब मन में निरंकार का वास होता है तो ज्ञान का रतन चमकता है।
(गुरु नानक)

मेरा नाम महंत बजरंगी दास उदासी है और मैं गुरु नानक देव जी महाराज के पुत्र बाबा श्री चंद जी के चलाये हुये उदासी मत को मानता हूं। जैसा कि इतिहास से पता चलता है इस रास्ते से गुरु नानक देव जी महाराज गये, इसी रास्ते से नौवें पातशाह, श्री गुरु तेग़ बहादुर जी महाराज का आगमन इस स्थान पर हुआ। उस समय से हमारा परिवार यहां सासाराम में रह रहा है। हम तब से इस गुरुद्वारे की देखभाल कर रहे हैं। गुरु नानक देव जी महाराज ने शिक्षा पर ज़ोर दिया। इसलिये हमारे मन में आया कि हम गुरु नानक के नाम पर, हम उनके वंशज हैं, तो उनके नाम से ही स्कूल चलायें, लोगों और हमारे बिहारी बच्चों को बतायें कि गुरु नानक कौन थे। गुरु नानक ने तीन बातें बताई-नाम जपें, बांट कर खायें, मेहनत करें। हम गुरु नानक पब्लिक स्कूल के बच्चों को इन तीन मूल उद्देशयों के बारे में बताते हैं।

गांव के वंचित निवासियों को शिक्षा और उपचार प्रदान करने के लिये इस गुरुद्वारे से स्कूल और दवाख़ाना चलाया जाता है और इस स्थान का इंतज़ाम उदासीन संप्रदाय करता है।

गुरु नानक के संदेश को फैलाने के लिये उदासीन संप्रदाय ने कई केंद्र स्थापित किए। इन स्थानों पर दान-दाताओं की फ़हरिस्त से एक दिलचस्प तथ्य सामने आता है कि यह केंद्र स्थानीय ग़ैर-सिख आबादी के दान से बनाये गये हैं। यह गुरु नानक के फ़लसफ़े की स्वीकृति की गवाही देता है क्योंकि यह फ़लसफ़ा सारी दुनिया के लिये है।

इस स्थान के दर्शन से एक अलग ही आनंद की अनुभूति होती है कि गुरु नानक के बेग़र्ज़ सेवा के संदेश दूर-दरार् के स्थानीय लोगों के दिलों को रंग रहें है, जिनका पंजाब से कोई संबंध नहीं है।

गली भिसत न जाईऐ छुटै सच कमाइ ॥
(राग माझ, गुरु नानक)

किसी को बातों से चैन नहीं मिल सकता। सत्य की प्राप्ति कर्मों के माध्यम से होती है।
(राग माझ, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि अगर ज्ञान को व्यवहार में नहीं लाया जाये तो वह बेकार है। यह ऐसा है जैसे कोई बासी खाने को मसाले डाल कर स्वादिष्ट बनाने की उम्मीद कर रहा हो।

गुरु नानक और मरदाना ने सासाराम से गया का सफ़र किया।

हम अब गुरु नानक के पदचिन्हों पर गया जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: गया शहर फल्गु नदी के तट पर स्थित है और तीन तरफ से कम उचाई वाले पथरीले पहाड़ों से घिरा हुआ है। प्राचीन काल से ही यह शहर पवित्र तीर्थस्थल के रूप में जाना जाता रहा है।

हम गया के प्राचीन विष्णुपद मंदिर जा रहे हैं।

गया का नाम एक पौराणिक कहानी के अनुसार गयासुर नामक दैत्य से पड़ा है, जो लोगों को मुक्त करने के लिये अपनी शक्ति का ग़लत इस्तेमाल करता था, जिस कारण विष्णु ने गयासुर के सिर पर अपना पैर रखा और उसे मार डाला। विष्णुपद मंदिर में एक काले पत्थर की चट्टान पर पदचिन्ह है। हिंदुओं का मानना है कि यह विष्णु के पदचिन्ह हैं, जबकि बौद्ध मानते हैं कि यह गौतम बुद्ध के पदचिन्ह हैं। विष्णुपद मंदिर के नज़दीक फल्गु नदी के घाट पर लोग 'पिंड दान' करते हैं ताकि उनके इस दुनिया को अलविदा कह गये रिश्तेदारों को मुक्ति मिल सके।

मनी लाल बारिक: जब गया जी में 'पिंडदान' शुरु हुआ है, उस समय से ही मेरे पूर्वज यहां हैं। हम पर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। जो हिंदू तीर्थयात्री जम्मू, हिमाचल, पंजाब, पाकिस्तान के पंजाब से गया जी आते हैं, हम आज तक उनके धार्मिक कर्मकांड, पिंडदान, पूजा-पाठ रिवाज़ के अनुसार करवाते हैं।

पिंड चढ़ावे के सात पेड़े हैं जो चावल और गेहूं के आटे, सूखे दूध, शहद और तिल से बने होते हैं। पुजारी इनका उपयोग कर्मकांड के लिये करते हैं और वह स्वयं 'दान' की अपेक्षा करते हैं।

जब गुरु नानक नदी के तट पर ध्यान कर रहे थे, तब पुजारियों ने उन्हें अपने पूर्वजों की अंतिम रस्म करवाने की सलाह दी ताकि उनको जन्म और मृत्यु के चक्र से छुटकारा मिल सके। गुरु नानक ने नम्रतापूर्वक इंकार

करते हुये कहा कि उन्होंने ज्ञान का दीपक जलाकर अज्ञान के अंधकार को दूर करने का अनुष्ठान कर लिया है। उन्होंने कहा कि मृत्यु के बाद मुक्ति की आशा व्यर्थ है। ज़िंदगी में अच्छे कर्म ही मोक्ष दिला सकते हैं।

इक लोकी होर छमिछरी ब्राहमण वट पिंड खाइ ॥
नानक पिंड बखसीस का कबहूँ निखूटस नाहि ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

मृत हो चुके पूर्वजों को पेड़े की दावत दी जाती है लेकिन पुजारी दावत खाते हैं।
नानक ने फ़रमाया कि अच्छे कार्यों की दावत कभी ख़त्म नहीं होती।
(राग आसा, गुरु नानक)

गुरु नानक ने ख़ुलासा किया कि कर्मकांड का दस्तूरी कार्य मुक्ति के नाम पर पैदा की गई ग़लतफ़हमी है। इसके बजाय मनुष्य को शुकराना करना चाहिए जो हमेशा एक गुण के रूप में इंसान के साथ रहता है।

फल्गु नदी के किनारे की संकरी गलियों में हम उस स्थान पर जा रहे हैं जो गुरु नानक के गया आने की याद में बनाया गया है।

अमरदीप सिंह: यह स्थान फल्गु नदी के किनारे, गुरु नानक के गया आने की याद में 'उदासीन' सम्प्रदाय ने बनाया था। इस स्थान को गुरुद्वारा देव घाट कहते हैं। अब यह स्थान वीरान पड़ा है।

गुरु हरगोबिंद के समकालीन बाबा अलमसत ने शिक्षा का यह केंद्र गुरुद्वारा देव घाट बनाया था। दुर्भाग्य से अब यह जगह खंडहर है। इतिहास में प्रमाण हैं कि एक समय में बाबा अलमसत की मुहर और गुरु तेग़ बहादुर का 'हुकमनामा' यहां संभाल कर रखे हुये थे। इस स्थान के आख़िरी नामवर महंत बाबा राम दास उदासीन थे। यहां बची पालकी पर गुरुमुखी में 'गुरु ग्रंथ साहिब' के सबद लिखे हुये हैं। हमें एक स्थानीय बुज़ुर्ग ने बताया कि जब वह छोटे थे तो यहां 'उदासियों' की संगत जुड़ती थी। वह अक्सर 'गुरु ग्रंथ साहिब' का पाठ करते थे।

इस उजाड़ स्थान के वीराने में से बीते समय के साथ जुड़ना एक अनूठा अनुभव है। एक समय यह स्थान 'गुरु नानक के प्यारों' के लिये शिक्षा का एक समृद्ध केंद्र था। दुनिया के रंग निराले हैं जो मेरे सामने अतीत की बातें खंडरों से ला रहे हैं।

जिउ लाहा तोटा तिवै वाट चलदी आई ॥
जो तिस भावै नानका साई वडिआई ॥
(राग आसा काफी, गुरु नानक)

यहीं संसार का दस्तूर है कि कभी लाभ होता है तो कभी नुकसान हो जाता है।
नानक ने फ़रमाया कि कुदरत के हुकम में ही महिमा है।
(राग आसा काफी, गुरु नानक)

गया के बाद गुरु नानक और भाई मरदाना ने बोध गया की यात्रा की।

हम अब बोध गया के महाबोधी मंदिर जा रहे हैं जो गया से बारह किलोमीटर दूर है।

अमरदीप सिंह: ऐसा माना जाता है कि गौतम बुद्ध को बोध गया में 'बोधी' वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था। इस कारण यह स्थान बोधियों के लिये पवित्र है।

राजकुमार सिद्धार्थ का नाम गौतम बुद्ध के रूप में दुनिया भर में फैला। उन्होंने छह साल तक आत्म-कष्ट देने वाली तपस्या की। 'बोधी' वृक्ष के नीचे ध्यान में डूबे बुद्ध को जब तपस्या की निरर्थकता का अहसास हुआ, तो उन्होंने अपने-आप को इस तरह की प्रथाओं से दूर कर लिया। उस दिन को रोशन-ख़्याली का दिन कहा जाता है।

गौतम बुद्ध का जन्म गुरु नानक से तकरीबन दो हज़ार साल पहले हुआ था लेकिन सामाजिक संरचनाओं पर उनके ख़्याल आपस में मेल खाते हैं। दोनों ने अपने-अपने युग में जाति और मज़हबी दर्जाबंदियों के ख़िलाफ़ इंकलाब का झंडा बुलंद किया। दोनों ने समानता, मानवता और इंसानियत की सेवा की वकालत की।

जब महाबोधी मंदिर के महंत देव गिर ने गया में गुरु नानक के विचारों को सुना तो उन्होंने उन्हें बोध गया में रहने के लिये आमंत्रित किया।

बुद्ध और गुरु नानक दोनों ने ख़ुदाई के मूर्त रूप से लगाव को रद्द किया और लोगों को सद्गुणी ज़िंदगी गुज़ारने की सलाह दी। बुद्ध संशयवादी थे, वह ईश्वर के अस्तित्व को ना मानते थे और ना ही इनकार करते

थे। दूसरी ओर गुरु नानक इलाही ताकत के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। उस को चाहे भूझा ना जा सके लेकिन वह हर जगह मौजूद है।

मेरी सखी सहेली सुनहु भाइ ॥
मेरा पिर रीसालू संग साइ ॥
ओह अलख न लखीऐ कहहु काइ ॥

मेरी सखियों और संगियो, यह बात प्यार भरे दिल से सुनों।
मेरा शरीक-ऐ-हयात अमृत का ख़ज़ाना है उसका निवास मेरे भीतर है।
जब उसे देखा नहीं जा सकता तो उसका वर्णन कैसे हो सकता है?
(राग बसंत, गुरु नानक)

गौतम बुद्ध ने ज़ोर दिया कि किसी को भी मूर्ति से जोड़ना व्यर्थ है। इसके बावजूद मौजूदा दौर में उनकी मूर्ति की पूजा की जाती है।

पाथर ले पूजहि मुगध गवार ॥
ओहि जा आप डुबे तुम कहा तरणहार ॥
(राग बिहागड़ा, गुरु नानक)

अज्ञानी लोग पत्थर पूजते हैं।
जो पत्थर आप डूब जाता है वह तारणहार कैसे हो सकता है?
(राग बिहागड़ा, गुरु नानक)

मूर्तिपूजा के माध्यम से मानव मन को अपने रहबर की सूरत की पूजा करने में वक्ती तस्सली मिलती है। गुरु नानक ने ज़ोर दिया कि सदगुणी जीवन बसर करना भी पूजा का रूप है जो सदैव तस्सली देता है।

बोध गया के बाद गुरु नानक और भाई मरदाना ऐतिहासिक शहर हाजीपुर के लिये रवाना हो गये।

हम अब बोध गया से हाजीपुर जा रहे हैं।

हाजीपुर प्राचीन काल से बसा हुआ है। बिहार राज्य में इस शहर के पश्चिमी भाग में गंडकी और दक्षिणी भाग में गंगा बहती है।

कई दिनों के सफ़र के बाद गुरु नानक और भाई मरदाना हाजीपुर पहुंचे तब उन्हे पैसों की कमी हुई। गुरु नानक के पास एक रतन था जिसे उन्होंने बेचने के लिये भाई मरदाना को दिया ताकि ज़रूरत का सामान खरीदा जा सके। भाई मरदाना स्थानीय सराफ़ा बाज़ार, जवाहरटोला में पहुंचे, यहां उन्होंने कई जौहरियों से मुलाकात की, लेकिन उनकी साधारण पोशाक को देखते हुये, किसी भी सराफ़ ने उस रतन की कीमत नहीं लगायी। जब वह एक सराफ़ की दुकान पर पहुंचे तो अधरक नाम के एक कारिंदे ने उन्हें बड़े सम्मान से बुलाया और रतन को दुकान के मालिक सालिस राय के पास ले गया। सालिस राय ने रतन की कीमत को पहचाना और उसके मालिक के साथ सौदेबाज़ी करने को तैयार हो गये। उसने अधरक को भाई मरदाना को रतन वापस करने का आदेश दिया और एक बड़ी राशि का भुगतान भी किया। भाई मरदाना राशि और रतन लेकर लौटे। गुरु नानक ने राशि लेने से इनकार कर दिया। उनका तर्क था कि जब सौदा नहीं हुआ तो राशि लेना भीख जैसा है। उन्होंने भाई मरदाना से राशि वापस करने का अनुरोध किया। सालिस राय उनकी ईमानदारी से प्रभावित हुये और भाई मरदाना के साथ गुरु नानक से मिलने गये।

सालिस राय ने गुरु नानक से अनुरोध किया कि उसको इस भटकन से भरे संसार में कद्रों-कीमतों को कायम रखने का मंत्र बतायें।

पदमन जावल जल रस संगत संग दोख नही रे ॥
(राग मारू, गुरु नानक)

कमल का फूल कीचड़ में खिलता है और इस संगत का आनंद लेता है पर उसकी अपूर्णताओं से अप्रभावित रहता है।
(राग मारू, गुरु नानक)

कमल के फूल को रूहानियत की निशानी माना जाता है। इसमें पालनहार, पुनर्जीवत होने, लचकता और पाकीज़गी के गुण हैं। गुरु नानक ने कहा कि मनुष्य को कमल के फूल की तरह ज़िंदगी जीने की इच्छा रखनी चाहिए। गंदगी में रहते हुये भी इसके कीचड़ से न्यारा रहना चाहिए। बुरे हालात में भी ईमानदार और रचनात्मक सोच रखनी चाहिए।

गुरु नानक ने सालिस राय को सलाह दी कि दौलतमंदी मनुष्य के रूहानी सफ़र में बाधा नहीं बननी चाहिए। उन्होंने कहा कि अधरक मामूली मुलाज़िम होते हुये भी ज़्यादा प्रबुद्ध हो सकते हैं। अच्छाई का पहलू सामाजिक, मज़हबी या आर्थिक रुतबा नहीं, बल्कि विनम्रता है।

हम कुछ सर्राफ़ों से मिले ताकि उनकी बिरादरी में गुरु नानक के समकालीन सालिस राय के किसी वृतांत के बारे में कुछ पता लग सके।

अमरदीप सिंह: नमस्कार जी, आप जी से कुछ बात करनी थी। आप सालिस राये जी के बारे में कुछ जानते हैं?
राजू सोनी: सालिस राये जी, उनकी गुरु नानक देव के साथ मुलाकात हुई थी। उस के बाद उनके नाते-रिश्तेदार बाहर चले गये थे। यह तो बहुत पहले की बात है।
अमरदीप सिंह: उनका घर वग़ैरा है कोई?
राजू सोनी: नहीं, कहीं नहीं। घर-बार सब कुछ बेचकर चले गये।
अमरदीप सिंह: अच्छा जी!
राजू सोनी: गुरुद्वारे को ज़मीन दान कर दी और चले गये।
अमरदीप सिंह: अच्छा जी! नमस्कार।

अब हम गुरुद्वारा गाय घाट जा रहे हैं जो गंगा नदी के पास है।

अमरदीप सिंह: गुरुद्वारा गाय घाट गुरु नानक और भाई मरदाना के हाजीपुर में आगमन से जुड़ा है।

हाजीपुर से गुरु नानक और भाई मरदाना ने सोनपुर की यात्रा की।

अब हम सोनपुर पहुंचने के लिये गंडकी नदी को पार कर रहे हैं जो इसके उत्तरी किनारे पर बसा हुआ है।

अमरदीप सिंह: सदियों से सोनपुर वैष्णव तबके का तीर्थ स्थान रहा है और गजग्रह के मिथक से जुड़ा हुआ है।

सोनपुर में 'कार्तिक पूर्णिमा' को गंडकी और गंगा के संगम पर वार्षिक मेला लगता है जो नवंबर के महीने में होता है। यह वैष्णव मत का भी तीर्थ स्थान है। विष्णु के उपासक इस संगम के स्नान को पवित्र मानते हैं और स्नान के बाद हरिहरनाथ मंदिर में पूजा करते हैं।

हम अब हरिहरनाथ मंदिर जा रहे हैं।

'गजेंद्र मोक्ष' का अफ़साना 'गजग्रह' के मिथक को बताता है कि फूलों की ओर आकर्षित एक हाथी कमल के फूलों से भरे तालाब में घुस गया। वहां एक मगरमच्छ ने उसका पैर पकड़ लिया। लंबे संघर्ष के बाद भी जब वह अपना पैर नहीं छुड़ा पाया तो उसने अपनी सूंड में कमल का फूल पकड़कर भगवान विष्णु से प्रार्थना की। भगवान विष्णु ने सच्ची पुकार सुनी और हाथी को मगरमच्छ के जबड़े से छुड़ा दिया।

इहु जग मोह हेत बिआपितं दुख अधिक जनम मरणं ॥
भज सरण सतिगुर ऊबरहि हर नाम रिद रमणं ॥
(राग गुजरी, गुरु नानक)

यह संसार मोह के वक़्ती बंधन में फंस कर लगाव और बेलागपन की विपता को सहेज लेता है।
सच्चे विवेक की शरण में ध्यान करने से मोक्ष का मार्ग मिल जाता है। बार-बार आत्म निरीक्षण करें।
(राग गुजरी, गुरु नानक)

इस मिथक में हाथी अज्ञानता और मगरमच्छ भौतिकवादी भंवरों का रूप है। उसी प्रकार कीचड़ का कुण्ड संसार का रूप है और कमल का फूल चेतना का रूप है। मगरमच्छ के चंगुल से हाथी का छूटना विवेकवान होने की निशानी है।

नदी के किनारे एक तीर्थयात्री ने गुरु नानक से पूछा कि जब मन में भौतिक चीज़ों की इच्छा प्रबल हो तो रूहानियत का मार्ग कैसे लिया जा सकता है। तब गुरु नानक ने यह सबद गाया,

तन बिनसै धन का को कहीऐ ॥
बिन गुर राम नाम कत लहीऐ ॥
राम नाम धन संग सखाई ॥
अहिनिस निरमल हर लिव लाई ॥

राम नाम बिन कवन हमारा ॥
सुख दुख सम करि नाम न छोडउ आपे बखस मिलावणहारा ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

जब शरीर साथ छोड़ जाता है तो धन-दौलत की मिल्कियत कहां जाती है?
विवेक के बिना कोई ख़ुदाई कैसे पा सकता है?
मनुष्य का साथ सिर्फ़ विचार और चेतना ही देते हैं।
मनुष्य को दिन-रात विवेकवान होने पर ध्यान लगाना चाहिए।
इलाही ज्ञान के बिना हमारा क्या है?
लालसा और दर्द एक ही हैं। उस मुकद्दस को मत भूलो जो माफ करने वाला और मिलाने वाला है।
(राग आसा, गुरु नानक)

जब मानव शरीर पंचतत्वों में लीन हो जाता है तो उसकी जमा की हुई दौलत किसी काम नहीं आती। गुरु नानक ने कहा कि जोड़ने वाली पूंजी ज्ञान है जो अंधकार को प्रकाश में बदल देती है।

हम अब सोनपुर में उदासियों के केंद्र, लोकसेवा आश्रम जा रहे हैं।

एक उदासीन बुज़ुर्ग ने हमें बताया कि पहले लोकसेवा आश्रम में गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश होता था। उन्होंने बताया कि उदासियों की मौजूदा पीढ़ी का गुरु नानक के फ़लसफ़े से लगाव नहीं है, लेकिन यह बुज़ुर्ग ऐसी संस्कृति में पले-बढ़े हैं जहां गुरु नानक का फ़लसफ़ा उदासीन संप्रदाय का मूल था।

महंत विष्णु दास उदासीन: हमारे संप्रदाय की शुरुआत गुरु नानक देव के पुत्र श्री चंद जी से हुई थी। उदासी संप्रदाय क्या है? संसार के बंधनों से उदास होकर परमपिता परमात्मा के साथ जुड़ जाना। हमारे तीन अखाड़े हैं। तीन अखाड़ों का धर्म क्या है? पूरे हिंदुस्तान और दुनिया भर में घूम-घूम कर प्रचार करना। गुरु नानक देव जी ने गुरु मंत्र दिया। उन्होंने हमें परमपिता परमेश्वर का नाम बताया। उसका नाम, ੧ੴ। भगवान एक है, सतिनाम। ईश्वर सत्य है। सारा संसार झूठ है। परमात्मा एकमात्र सच है। उन्होंने सिखाया है कि हे मनुष्य यदि संसार में सुख चाहिए तो ईश्वर का ध्यान करो। सिमरन से ही सब कुछ मिलेगा। हमारा गुरु ग्रंथ साहिब तो भगतों की बाणी है। भाषा नहीं है। भगत ने अपनी बाणी रखी है। उसे ही छापा गया है। यहां कोई जात-पात नहीं है। किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं है।

बटवारे और एकतरफा झुकाव में डूबे हुये लोग ऐकता का जश्न मनाने के बजाय बेइत्फ़ाकी का गुणगान करते हैं। गुरु नानक ने कहा कि संसारिक खेल की महिमा यह पहचानने में है कि हम सभी एक-दूसरे से जुड़े हुये हैं।

विछुड़िआ का किआ वीछुड़ै मिलिआ का किआ मेल ॥
साहिब सो सालाहीऐ जिन कर देखिआ खेल ॥
(राग मारू, गुरु नानक)

बेचैन मन से बुरा कोई वियोग नहीं है और अपने आंतरिक मन के साथ सुरबद्ध होने से बड़ा कोई मिलन नहीं है।
सांसारिक खेल को जानने वाले प्रशंसा के पात्र हैं।
(राग मारू, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड ९: सम्पजना (ख़ालस एहसास)

ये चर्चा संकेतक वाराणसी से सोनपुर तक गुरु नानक की यात्रा की गहरी समझ प्रदान करने के लिए एक प्रभावशाली संरचना प्रस्तुत करते हैं। ऐतिहासिक रूप से, वे विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों के साथ उनकी बातचीत, उनकी यात्राओं से जुड़े महत्वपूर्ण स्थलों, और उनकी रुहानी विरासत को संरक्षित व प्रसारित करने में उदासीन परंपरा की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देते हैं। दार्शनिक रूप से, ये बिंदु दिव्य विधान, अनुष्ठानवाद, सदाचारपूर्ण जीवन, संपत्ति और मुक्ति की खोज जैसे विषयों को संबोधित करते हैं। संयुक्त रूप से, वे दर्शाते हैं कि गुरु नानक ने पूर्वी भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक पृष्ठभूमि से कैसे संवाद स्थापित किया, पारंपरिक विश्वासों को चुनौती दी और शक्तिशाली रूपकों के माध्यम से रुहानी उत्थान के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान किया। उनके विभिन्न सामाजिक वर्गों के लोगों, जैसे मुखिया हरि नाथ, धनी जौहरी सालिस राय और साधारण तीर्थयात्रियों के साथ हुए संवाद, उनकी असाधारण संवाद क्षमता को उजागर करते हैं, जिससे वे विशिष्ट चिंताओं का उत्तर देते हुए रुहानी ज्ञान और नैतिक आचरण के मूल सिद्धांतों का पालन कर सके। ये चर्चा बिंदु प्राचीन भारत की परंपराओं के केंद्र में गुरु नानक की यात्रा की गहरी खोज के लिए प्रेरित करते हैं।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. **वाराणसी छोड़ने के बाद गुरु नानक की यात्रा मार्ग क्या था, और रास्ते में उनकी कौन-कौन सी महत्वपूर्ण बातचीत हुई?**

एपिसोड गुरु नानक की वाराणसी से चंदौली, सासाराम, गया, बोधगया, हाजीपुर होते हुए सोनपुर की यात्रा को दर्शाता है। यह यात्रा उन्हें पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्रों से होकर ले गई। चंदौली में, गुरु नानक की भेंट नगर प्रमुख हरि नाथ से हुई, जो मानसिक रूप से अशांत थे और मुखिया का पद त्यागने का विचार कर रहे थे। गया में, उन्हें पुजारियों से सामना हुआ, जिन्होंने उनसे अनुरोध किया कि वे अपने पूर्वजों की आत्माओं की मुक्ति के लिए अनुष्ठानिक प्रार्थनाएँ करें। हाजीपुर में, वे जौहरी सालिस राय से मिले, जिन्होंने गुरु नानक की ईमानदारी को देखकर उनसे ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की, जब उन्होंने बिना लेन-देन के धन स्वीकार करने से इनकार कर दिया। विभिन्न स्थानों पर हुई इन वार्ताओं से गुरु नानक के समाज के विभिन्न वर्गों के साथ संवाद करने

के दृष्टिकोण का किस प्रकार खुलासा होता है, और उनके उत्तरों में किस प्रकार के पैटर्न उभरकर आते हैं?

२. बिहार में गुरु नानक की विरासत को संरक्षित करने में उदासीन परंपरा ने कैसे योगदान दिया?

एपिसोड बिहार में गुरु नानक के दर्शन को संरक्षित और प्रचारित करने में उदासीन परंपरा की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। यह उल्लेख करता है कि बिहार में 'उदासीन' (सन्यासी) संप्रदाय द्वारा कई केंद्र स्थापित किए गए थे, ताकि गुरु नानक की विचारधारा का प्रसार किया जा सके, लेकिन हाल के समय में उनमें से अधिकांश गुमनामी में चले गए हैं। एपिसोड विशेष रूप से महंत बजरंगी दास उदासीन का उल्लेख करता है, जो गुरु नानक के अनुयायी हैं और सासाराम में 'प्राचीन ऐतिहासिक उदासीन गुरुद्वारा' का संचालन कर रहे हैं, जहाँ वे वंचित ग्रामीणों के लिए एक विद्यालय और चिकित्सा केंद्र चलाते हैं। सोनपुर में, लोक सेवा आश्रम को एक 'उदासीन' (सन्यासी) केंद्र के रूप में पहचाना जाता है, जहाँ वरिष्ठ 'उदासीन' (सन्यासी) बताते हैं कि पहले यहाँ 'गुरु ग्रंथ साहिब', सिख धर्मग्रंथ, को प्रतिष्ठित किया गया था। महंत विष्णु दास उदासीन बताते हैं कि उनका संप्रदाय गुरु नानक के पुत्र श्रीचंद द्वारा आरंभ किया गया था। 'उदासीन' जीवन पद्धति क्या है? यह परंपरा पंजाब से दूर स्थित क्षेत्रों में गुरु नानक की उपस्थिति बनाए रखने में कैसे सहायक रही, और हाल के समय में इन केंद्रों के पतन में किन कारकों ने योगदान दिया?

३. बिहार में गुरु नानक की यात्रा से जुड़े कौन-कौन से ऐतिहासिक स्थल हैं, और उनकी वर्तमान स्थिति क्या है?

एपिसोड गुरु नानक की यात्रा से जुड़े कई स्थलों की पहचान करता है, जिनकी संरक्षण की स्थिति भिन्न-भिन्न है। सासाराम में, एपिसोड उल्लेख करता है कि यहाँ गुरु नानक की यात्रा से संबंधित कोई विशेष स्थल नहीं है, हालांकि यह 'गुरुद्वारा चाचा फागू मल' का उल्लेख करता है, जो तीसरे सिख गुरु के एक दूत की स्मृति में बनाया गया था। गया में, 'गुरुद्वारा देव घाट' को एक शिक्षण केंद्र के रूप में स्थापित किया गया था, जिसे बाबा अलमस्त ने स्थापित किया था, जो छठे सिख गुरु, गुरु हरगोबिंद के समय में रहते थे। दुर्भाग्य से, यह स्थल अब खंडहर में परिवर्तित हो चुका है। एपिसोड बताता है कि यहाँ बाबा अलमस्त की मुहर और नवें सिख गुरु, गुरु तेग बहादुर द्वारा जारी एक 'हुक्मनामा' कभी संरक्षित किया गया था। हाजीपुर में, एपिसोड 'गुरुद्वारा गाय घाट' का उल्लेख करता है, जो गुरु नानक और भाई मरदाना की यात्रा से जुड़ा हुआ है। सोनपुर में, लोक सेवा आश्रम को एक उदासीन केंद्र के रूप में पहचाना गया है। इन स्थलों की वर्तमान स्थिति इस क्षेत्र में गुरु नानक की विरासत की ऐतिहासिक निरंतरता के बारे में क्या दर्शाती है, और विभिन्न स्थलों के संरक्षण या पतन में किन कारकों ने योगदान दिया है?

४. एपिसोड गुरु नानक और गौतम बुद्ध के बीच क्या समानताएँ स्थापित करता है, और उनके ऐतिहासिक प्रभाव किस प्रकार समान हैं?

एपिसोड स्पष्ट रूप से गुरु नानक और गौतम बुद्ध की रुहानी विरासत को जोड़ता है, यद्यपि उनके बीच लगभग दो सहस्राब्दियों का अंतर है, फिर भी उनके विचार सामाजिक संरचनाओं पर समान रूप से प्रभाव डालते हैं। अपने-अपने काल में, उन्होंने जाति व्यवस्था और धार्मिक पदानुक्रम के विरुद्ध क्रांति का नेतृत्व किया। उन्होंने समानता, मानवता और मानव सेवा का प्रचार किया। एपिसोड उल्लेख करता है कि गुरु नानक और गौतम बुद्ध दोनों ने स्वयं को किसी भी भौतिक रूप से जोड़ने से इनकार किया और लोगों को सदाचारी जीवन जीने पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह दी। यह एक प्रमुख अंतर को भी स्वीकार करता है: बुद्ध एक अज्ञेयवादी थे, जिन्होंने ईश्वर के अस्तित्व को न तो स्वीकार किया और न ही नकारा। जबकि, गुरु नानक ने एक दिव्य शक्ति के अस्तित्व की पुष्टि की। एपिसोड आगे गौतम बुद्ध की विरासत में एक विडंबनापूर्ण विकास का उल्लेख करता है: बुद्ध ने शरीर से जुड़ाव को व्यर्थ बताया था, फिर भी वर्तमान समय में उनकी मूर्तिपूजा की जा रही है। ये समानांतर सुधार आंदोलन, जो दो सहस्राब्दियों के अंतराल में लेकिन एक ही भौगोलिक क्षेत्र में हुए, भारतीय उपमहाद्वीप में धार्मिक और सामाजिक विचारों के विकास में बार-बार प्रकट होने वाले पैटर्न को कैसे दर्शाते हैं?

५. बिहार में गुरु नानक के रुहानी संदेश के लिए सामुदायिक समर्थन के बारे में एपिसोड क्या प्रमाण प्रस्तुत करता है?

एपिसोड दर्शाता है कि गुरु नानक के सार्वभौमिक संदेश को पंजाब से परे विभिन्न समुदायों का समर्थन प्राप्त हुआ। अधिकांश 'उदासीन' (सन्यासी) स्थलों पर दानदाताओं के नाम की पट्टिकाओं से यह देखना दिलचस्प है कि ये केंद्र, जो गुरु नानक के संदेश के प्रचार हेतु स्थापित किए गए थे, स्थानीय गैर-सिख समुदायों के दान से निर्मित हुए। यह इस बात का प्रमाण है कि गुरु नानक के दर्शन को उसकी व्यापकता के कारण व्यापक स्वीकृति मिली। लेखक बताते हैं कि यह देखना आनंददायक था कि गुरु नानक का निःस्वार्थ सेवा का संदेश पंजाब से दूरस्थ स्थानों में भी स्थानीय लोग अपना रहे हैं, जिनका पंजाब से कोई संबंध नहीं है। यह क्या दर्शाता है कि गुरु नानक का दर्शन विशिष्ट धार्मिक पहचान से परे एक सार्वभौमिक अपील रखता है, और इस व्यापक स्वीकार्यता ने उनकी विरासत से जुड़े स्थलों की स्थापना और रखरखाव में किस प्रकार योगदान दिया?

६. एपिसोड गुरु नानक के नेतृत्व के दृष्टिकोण को हरि नाथ और सालिस राय के साथ उनकी बातचीत के माध्यम से कैसे चित्रित करता है?

एपिसोड दो महत्वपूर्ण वार्ताओं का वर्णन करता है जो गुरु नानक के नेतृत्व पर दृष्टिकोण को प्रकट करती हैं। चंदौली में, हरि नाथ मानसिक रूप से अशांत थे और मुखिया का पद त्यागने का विचार कर रहे थे। गुरु नानक ने उन्हें एक सदाचारी नेता के रूप में अपने कर्तव्य को निभाने और अपनी प्रजा की निःस्वार्थ सेवा करने की सलाह दी। इस मुक्ति मार्ग में वे जुड़े रहकर भी अलग रह सकते थे। यह वार्ता दर्शाती है कि रुहानी उन्नति के लिए सांसारिक उत्तरदायित्वों का त्याग आवश्यक नहीं है, बल्कि उन्हें त्याग और सेवा की भावना से निभाना चाहिए। हाजीपुर में, जब बिना लेन-देन के उन्हें धन प्रदान किया गया, तो गुरु नानक ने इसे स्वीकार नहीं किया। उनके लिए, बिना क्रय-विक्रय के इसे स्वीकार करना भिक्षा लेने के समान था। बाद में, उन्होंने सालिस राय को सलाह दी कि संपन्नता रुहानी विकास में बाधा नहीं बने और यह कि आद्रका, जो एक साधारण कर्मचारी था, अधिक ज्ञानवान हो सकता था। विनम्रता ही अच्छाई की कसौटी है, न कि सामाजिक, धार्मिक या आर्थिक स्थिति। ये वार्ताएँ गुरु नानक के संतुलित दृष्टिकोण को कैसे उजागर करती हैं?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक 'हुकम' (प्राकृतिक नियम) की अवधारणा को मानव स्वतंत्र इच्छा से कैसे जोड़ते हैं?

एपिसोड गुरु नानक की एक वाणी से शुरू होता है, जिसमें हुकम, अर्थात प्राकृतिक नियमों की चर्चा की गई है, जो संपूर्ण ब्रह्मांड को संचालित करता है। यह समझाया गया है कि यही नियम आकाश की व्यापकता को रचता है और जल, थल तथा तीनों लोकों में जीवन को बनाए रखता है। हुकम जीवन के निरंतर प्रवाह और पोषण को सुनिश्चित करता है। यह दर्शाता है कि यदि कोई अपने भीतर झांके, तो वह संपूर्ण सृष्टि के सार को समझ सकता है। एपिसोड यह स्पष्ट करता है कि हुकम प्रकृति का नियम है, जो सदा अपरिवर्तित रहता है और पूरे ब्रह्मांड की देखरेख करता है। यही नियम 'करम' या स्वतंत्र इच्छा की भी अनुमति देता है, जिससे व्यक्ति को कर्म करने की स्वतंत्रता मिलती है। गुरु नानक के अनुसार, व्यक्ति के कर्म ही उसके भाग्य का निर्माण करते हैं। यह दृष्टिकोण ब्रह्मांडीय व्यवस्था और व्यक्तिगत चुनाव के बीच संतुलन स्थापित करता है, यह दर्शाते हुए कि प्राकृतिक नियम पूरे विश्व को नियंत्रित करते हैं, लेकिन मनुष्य को अपने कार्यों के माध्यम से अपनी नियति को प्रभावित करने की स्वतंत्रता प्राप्त है। यह दिव्य व्यवस्था और मानव अधिकारिता की समझ पूर्ण नियतिवाद या संपूर्ण स्वतंत्र इच्छा आधारित दार्शनिक प्रणालियों से कैसे भिन्न है, और इसका व्यक्तिगत उत्तरदायित्व तथा रुहानी विकास पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?

२. गुरु नानक ने गया में 'पिंड दान' जैसे अनुष्ठानों की क्या आलोचना की?

एपिसोड गया में पूर्वजों के लिए किए जाने वाले 'पिंड दान' अनुष्ठान पर गुरु नानक की प्रतिक्रिया का वर्णन करता है। जब गुरु नानक नदी के तट पर ध्यानमग्न थे, तो कुछ पुरोहित उनके पास आए और सुझाव दिया कि वे अपने पूर्वजों के लिए अनुष्ठानिक प्रार्थनाएँ करें ताकि उनकी आत्माएँ पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त हो सकें। गुरु नानक ने विनम्रता से इनकार कर दिया और कहा कि उन्होंने अज्ञान के अंधकार को ज्ञान के दीप से दूर करने का अनुष्ठान पहले ही कर लिया है। उन्होंने कहा कि मृत्यु के बाद मोक्ष की आशा करना व्यर्थ है। जीवित रहते हुए सत्कर्म करना ही मुक्ति प्राप्त करने का मार्ग है। एपिसोड उनकी वाणी को उद्धृत करता है, जिसमें वे कहते हैं कि लोग अनुष्ठानपूर्वक मृत पूर्वजों को भेंट अर्पित करते हैं, परंतु वास्तव में उन भेंटों को पुरोहित ही ग्रहण करते हैं। गुरु नानक कहते हैं कि अच्छे कर्मों की दी गई भेंट कभी समाप्त नहीं होती। आगे यह समझाया गया है कि गुरु नानक स्पष्ट करते हैं कि मोक्ष प्राप्त करने के लिए अनुष्ठानों का पालन करना एक भ्रम है। इसके बजाय, वे आभार की भावना विकसित करने की सलाह देते हैं, जो सदा बनी रहती है। यह आलोचना उस समय की स्थापित धार्मिक अर्थव्यवस्था को कैसे चुनौती देती है, और वे अनुष्ठानिक भेंटों के स्थान पर कौन से वैकल्पिक रुहानी अभ्यास प्रस्तावित करते हैं?

३. गुरु नानक ने कमल के फूल को सद्गुणपूर्ण जीवन का रूपक कैसे बनाया?

एपिसोड में गुरु नानक द्वारा सालिस राय के प्रश्न के उत्तर में कमल के फूल को एक रूपक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। सालिस राय ने पूछा कि इस भटकाने वाली दुनिया में अपने सिद्धांतों को कैसे बनाए रखा जाए। गुरु नानक उत्तर देते हुए कहते हैं कि कमल का फूल कीचड़ में खिलता है, उसके साथ रहता है, फिर भी उसकी अशुद्धियों से अछूता रहता है। कमल का फूल रुहानीता का प्रतीक माना जाता है। इसमें प्रदान करने, पुनरुत्थान, सहनशीलता और पवित्रता के गुण होते हैं। गुरु नानक कहते हैं कि कमल के फूल की तरह जीवन जीने की आकांक्षा रखो। वे समझाते हैं कि गंदगी के बीच रहने के बावजूद, वे कीचड़ से प्रभावित नहीं होते। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपनी निष्ठा और सकारात्मकता बनाए रखो। यह रूपक रुहानी जुड़ाव का ऐसा दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो न तो संसार का पूर्णतः त्याग करता है और न ही उसमें पूरी तरह से लिप्त होता है, बल्कि उसमें संलग्न रहते हुए आंतरिक पवित्रता बनाए रखता है। यह रूपक संपूर्ण सांसारिक संलिप्तता और पूर्ण सन्यास के बीच एक मध्य मार्ग कैसे प्रदान करता है, और यह दैनिक जीवन में नैतिक चुनौतियों को नेविगेट करने के लिए क्या व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है?

४. गुरु नानक की दिव्यता की अवधारणा गौतम बुद्ध के अज्ञेयवाद से कैसे भिन्न है?

एपिसोड गुरु नानक की दिव्यता की अवधारणा की गौतम बुद्ध के अज्ञेयवाद से स्पष्ट रूप से तुलना करता है। गौतम बुद्ध न तो ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, न ही उसे नकारते हैं। दूसरी ओर, गुरु नानक इस बात की पुष्टि करते हैं कि एक दिव्य शक्ति का अस्तित्व है। यह समझ में न आने योग्य हो सकती है, लेकिन यह हर जगह विद्यमान है। एपिसोड गुरु नानक की एक वाणी को उद्धृत करता है, जिसमें वे समझाते हैं कि प्रेमपूर्ण हृदय से सुनो। वे कहते हैं, मेरा प्रिय अमृत का भंडार है, सदा मेरे भीतर स्थित है। यह अगोचर और अदृश्य है। मैं इसे कैसे वर्णित करूं? यह गुरु नानक की यह स्थिति प्रकट करता है कि दिव्यता मानव समझ से परे हो सकती है, फिर भी यह वास्तविक, उपस्थित और आंतरिक अनुभव के माध्यम से सुलभ है। यह दार्शनिक अंतर रुहानी अभ्यास, नैतिक आचरण और परम वास्तविकता की समझ के लिए क्या प्रभाव डाल सकता है, और इसने बौद्ध धर्म और सिख धर्म की विशिष्ट विकास यात्राओं को कैसे आकार दिया होगा?

५. गुरु नानक की दृष्टि में भौतिक संपत्ति और रुहानी ज्ञान में क्या अंतर है?

एपिसोड गुरु नानक की सोंपुर में एक यात्री के साथ हुई बातचीत के माध्यम से भौतिक संपत्ति और रुहानी ज्ञान के सापेक्ष मूल्य को प्रस्तुत करता है। नदी के तट पर एक यात्री ने गुरु नानक से पूछा कि जब मन भौतिक लाभों की इच्छा करता है, तब रुहानीता की खोज कैसे की जाए? उत्तर में, गुरु नानक अपनी एक वाणी गाते हैं, जिसमें वे कहते हैं कि जब शरीर नष्ट हो जाता है, तो धन का स्वामी कौन बनता है? बिना सच्चे ज्ञान के आत्मचिंतन कैसे प्राप्त हो सकता है? मनन ही वह संपत्ति है, जो सच्चा साथी और मित्र है। एपिसोड यह स्पष्ट करता है कि जब शरीर नष्ट हो जाता है, तो अर्जित भौतिक धन किसी काम का नहीं होता। गुरु नानक कहते हैं कि असली लाभ ज्ञान को संचित करने में है, जो व्यक्ति को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। शास्त्र व्यापारी हैं। रुहानी ज्ञान ही सच्ची पूंजी है, जिसे धर्मयुक्त कर्मों से अर्जित किया जाता है। नानक कहते हैं कि इस पूंजी के अलावा और कोई भी उपार्जन लाभ नहीं दे सकता। यह परिप्रेक्ष्य किस प्रकार धन, लाभ और निवेश की धारणाओं को पुनर्परिभाषित करता है, जो पारंपरिक आर्थिक सोच को चुनौती देता है और जीवन विकल्पों के मूल्यांकन के लिए एक वैकल्पिक ढांचा प्रदान करता है?

६. गुरु नानक मन के भ्रम और उनके उपचार के बारे में क्या बताते हैं?

एपिसोड चंदौली में मानसिक कष्ट और उसके उपचारों पर गुरु नानक की अंतर्दृष्टि को दर्शाता है। वे देखते हैं कि मन बार-बार पीड़ा सहता है और अनावश्यक दर्द झेलता है। जो व्यक्ति रुहानी शिक्षा को भूल जाता है, वह एक रोगी की भांति विलाप करता है। अधिक बोलना व्यर्थ है; बिना शब्दों के भी सर्वव्यापी

शक्ति सब कुछ जानती है। गुरु नानक बताते हैं कि जब मन भ्रमित होता है, तो वह दुखी होता है और व्यर्थ बोलता है, जिससे मन और शरीर दोनों को नुकसान होता है। इसका उपचार आत्मनिरीक्षण के माध्यम से स्वीकृति में निहित है। यह संदेश मानसिक भ्रम को पीड़ा के स्रोत के रूप में पहचानता है और सुझाव देता है कि स्वीकृति, आत्म-चिंतन और रुहानी अंतर्दृष्टि इस स्थिति के लिए प्रभावी उपचार हो सकते हैं। मानसिक पीड़ा और उसके उपचारों की यह समझ मानसिक स्वास्थ्य के लिए समकालीन मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणों से कैसे तुलना कर सकती है, और चिंता, चिंतन और मनोवैज्ञानिक संकट के अन्य रूपों को संबोधित करने के लिए इसके क्या व्यावहारिक अनुप्रयोग हो सकते हैं?